Vol 8, Issue 11, 2025 **Impact Factor: 8.535** DOI: https://doi.org/10.31426/ijamsr.2025.8.11.8913

IJAMSR

International Journal of Advanced Multidisciplinary Scientific Research (IJAMSR) ISSN:2581-4281

प्राचीन भारतीय शिक्षा का विकास

सोमलता

शिक्षा संकाय, साईं नाथ विश्वविद्यालय, रांची

डॉ0 पूनम बाला अग्रवाल

एसोसिएट प्रोफेसर, शिक्षा संकाय, साईं नाथ विश्वविद्यालय, रांची

सारांश

भारतीय शिक्षा पद्धति ऐसी शिक्षा पद्धति है जिसको तक्षशिला एवं नालंदा जैसे विश्वविद्यालय अपने यहां प्रयोग करते थे और जिन्होंने भारत को चाणक्य, भास्कराचार्य, आर्यभट्ट तथा बाणभट्ट, आदि के जैसे विद्वान प्रदान किए हैं। भारतीय शिक्षा पद्धति की चमक ऐसी थी कि प्राचीन समय में विदेशों से अनगिनत विद्यार्थी विद्या अर्जन के लिए यहां आते थे। विदेशी तीर्थ यात्रियों में मेगास्थनीज, हवेनसांग, तथा फाहयान आदि का भारत आने का मुख्य कारण यहां के ज्ञान को अर्जित करना था। महमूद गजनवी ने यहां के ग्रन्थों की संस्कृत भाषा एवं उसकी भावना को समझ न पाने के कारण यहां के ग्रन्थों में दोष ढूढ़ने की ओर अग्रसर हो गया किंतु फिर भी वह यहां के ग्रंथो तथा भारतीय शिक्षा की प्रशंसा करने से स्वयं को रोक नहीं पाया। भारतीय शिक्षा पद्धति महान तथा बहुत ही प्राचीन शिक्षा व्यवस्था है। प्रस्तुत शोध पत्र में प्राचीनकालीन शिक्षा व्यवस्था के विषय में बताने का प्रयास किया गया है।

प्रस्तावना

प्राचीन भारतीय मनीषियों द्वारा शिक्षा शब्द का प्रयोग व्यापक एवं सीमित दोनों ही अर्थों में किया गया है। डा0 ए0 एस0 अल्तेकर ने शिक्षा को व्यापक अर्थ में बताया कि शिक्षा का तात्पर्य व्यक्ति को सभ्य व उन्नत बनाना है। इस दृष्टि से शिक्षा जीवनपर्यन्त चलने वाली एक प्रक्रिया है। सीमित अर्थों में शिक्षा से अभिप्राय उस औपचारिक शिक्षा से है जो व्यक्ति को ब्रह्मचर्य आश्रम के पश्चात् गृहस्थ आश्रम में प्रवेश करने से पूर्व छात्र रूप में गुरु से प्राप्त होती है। इस प्रकार वैदिक कालीन शिक्षा से तात्पर्य व्यक्ति का शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक एवं आध्यात्मिक विकास से है।

IJAMSR

International Journal of Advanced Multidisciplinary Scientific Research (IJAMSR) ISSN:2581-4281

प्राचीन भारतीयों का विचार था कि शिक्षा वह प्रकाश है, जिसके द्वारा व्यक्ति के सभी संशयों का उन्मूलन तथा सभी बाधाओं का निवारण हो जाता है। यह वास्तविक शक्ति है जिसके द्वारा व्यक्ति की बुद्धि, विवेक एवं कुशलता में वृद्धि होती है। शिक्षा ही जीवन की यथार्थता एवं उसके महत्व को समझने की क्षमता प्रदान करती है, जिससे व्यक्ति को मोक्ष प्राप्त होता है। वैदिक कालीन शिक्षाविदों ने शिक्षा के वास्तविक महत्व को स्वीकार करते हुए यह घोषणा की कि– ''विद्ययामृतमष्नुते'' अर्थात् विद्या से अमरत्व, परमानन्द एवं मोक्ष की प्राप्ति सम्भव है। वैदिक कालीन ऋषियों का ध्यान लौकिक दिशा की ओर भी था इसलिए उन्होंने भौतिक एवं आध्यात्मिक दोनों ही दृष्टियों से शिक्षा की व्यवस्था की थी।

प्राचीन शिक्षा पद्धति का विकास क्रमिक एवं स्वाभाविक ढ़ंग से हुआ। इसकी जड़े समाज के मंडल में थी और इसका विकास स्वाभाविक था। भारत के विद्या केन्द्र वनों और काननों के बीच स्थित प्रकृति की गोद में ऐसे शोभा से घिरे हुए सभ्यता एवं संस्कृति के अथाह स्त्रोत के रूप में थे, जिन स्थानों से मानवीय सभ्यता का विकास हुआ था। भारत ने राजनीतिक एवं आर्थिक क्षेत्र में उन्नति उतनी नही है, क्योंकि इसका उद्देश्य सांसारिक पदार्थ की संपन्नता की ओर नहीं रहा, इसका मुख्य उद्देश्य शिक्षा के क्षेत्र में विकास से रहा है। संसार की दूसरी जातियो ने जब सभ्यता के रूप में केवल बड़बड़ाना ही सीख रही थी, उस समय भारत ने उच्च तत्वज्ञान की मीमांसा को विकसित किया। भारत ने अपनी सभ्यता के एक पैमानें की स्थापना की। भारत के प्राचीन शिक्षकों ने शिक्षा के एक विशिष्ट रूप का विकास किया, जिसके द्वारा भौतिक/लौकिक और अभौतिक/पारलौकिक अनुभूतियों के समन्वय की स्थापना हुई और इस प्रकार भारतवर्ष मानवीय पूर्णता की ओर अग्रसर हुआ।

किसी भी राष्ट्र का बीता हुआ कल उसकी वर्तमान और आने वाले समय की प्रेरणा का मूल स्रोत होता है। वर्तमान की जड़ें अतीत से संबंधित होती हैं। प्राचीन कालीन भारत की यह विशेषता थी कि इसका निर्माण राजनीतिक, आर्थिक एवं सामाजिक क्षेत्र में न होकर ज्यादातर धार्मिक क्षेत्र में हुआ। जीवन के सभी अंगों में धर्म की प्रधानता थी।

IJAMSR

International Journal of Advanced Multidisciplinary Scientific Research (IJAMSR) ISSN:2581-4281

हमारी भारतीय संस्कृति धार्मिकता से ओत–प्रोत है। हमारे पूर्वज जिन्होंने जीवन की व्याख्या एवं कर्तव्यों का जो विश्लेषण किया है वे सभी विस्तृत आध्यात्मिक ज्ञान की ओर संकेत करते हैं। इनकी राजनीतिक और सामाजिक वास्तविकता केवल भौगोलिक सीमाओं में बंध कर नहीं रह गई है, बल्कि इन्होंने जीवन को व्यापक दृष्टिकोण से देखा और इसमें अपनें को पूरी तरह लगा देना ही अपना कर्तव्य समझा। हमारे देश भारत ने केवल भारतीयता का ही विकास नहीं किया बल्कि एक ऐसे मानव को जन्म दिया जो मानवता के कल्याण के लिए सदैव तत्पर रहे और मानवता का विकास करना उसकी सभ्यता का एकमात्र उद्देश्य हो गया। उसके द्वारा वसुधैव कुटुंबकम् की नीति अपनायी गयी। सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक क्षेत्रों में धर्म का नियंन्त्रण होने से जीवन में अलौकिक एवं आध्यात्मिक विचारधारा का समावेश हुआ। प्राचीन हिंदुओं की राजनीतिक हिंसा, स्वार्थ नहीं बल्कि प्रेम एवं सदाचार तथा परमार्थ पर आधारित थी। व्यक्ति के विकास से ही समाज का विकास सम्भव होता है। आर्थिक क्षेत्र जीवन के कोमल और पवित्र धार्मिक भावनाओं एवं क्रियाओं को निर्देशित करता है। संपूर्ण भारतीय सामाजिक संगठन मानवीय भावनाओं तथा जीवन के सिद्धांतों पर आधारित थे। जीवन का मुख्य उद्देश्य आदर्श की प्राप्ति करना और उसकी प्राप्ति विश्व की भौतिक विभूतियों से और उच्च स्तर की समझी जाती थी। प्राचीन भारतीय शिक्षा का विकास इसी आधार पर हुआ है।

प्राचीन कालीन भारतीय शिक्षा की उत्पत्ति वेदों से मानी जाती है। ये विश्व का सबसे पुराना साहित्य है। वेदों का ज्ञान आदिकाल में लिपिबद्ध नहीं था। अतः वेदों के इस ज्ञान को ऋषियों के द्वारा लिखित रूप में रखा गया। 'वेद' शब्द की उत्पत्ति 'विद' धातु से हुआ है। जिसका शाब्दिक भाव ज्ञान प्राप्त करना है। वेद भारतीय जीवन दर्शन के श्रोत माने जाते है। इसे अनादि माना जाता है। इसके अन्तर्गत सांसारिक, व्यवहारिक तथा आध्यात्मिक क्षेत्रो में मनुष्य के लिए आवश्यक ज्ञान को संग्रहित किया गया है। ये चार वेदो के रूप में यथा ऋग्वेद, सामवेद, यजुर्वेद एवं अथर्ववेद स्वीकार किया जाता है। ऋग्वेद जो कि आदिवेद के रूप में माना गया है। ये वेद विभिन्न ऋषियों, मुनियों

IJAMSR

International Journal of Advanced Multidisciplinary Scientific Research (IJAMSR) ISSN:2581-4281

द्वारा रचना किये गये स्त्रोतो का एक संकलन है। इसमें हमारे देश के प्राचीन सामाजिक तथा सांस्कृति जीवन और सभ्यता के अनेकों पृष्ठों का सजीव चित्रण देखने को मिलता है। आगे के तीन वेद ऋग्वेद से भिन्न कार्यों को प्रस्तुत करते है। सामवेद गायन पुस्तिका के विषय में जाना जाता है और इसका मुख्य उद्देश्य मंत्रो और श्लोको को सस्वर दोहराना है। मंत्रो, प्रार्थनाओं एवं यज्ञों की विधियों का सजीव वर्णन यजुर्वेद में देखने को मिलता है। भारतीय चिकित्सा पद्धति अथर्ववेद में जाना जाता है इसमें नक्षत्र विज्ञान, अर्थशास्त्र एवं दर्शनशास्त्र के सम्बन्ध में बताया गया है।

वेद शब्द स्वयं में ही इतना व्यापक अर्थवाला है कि विश्व का सम्पूर्ण ज्ञान इसके अन्दर समाहित हो जाता है। यथा भारतीय शिक्षा का मुख्य स्त्रोत वेद था क्योंकि इसी पर भारतीयों का सम्पूर्ण जीवन दर्शन आधारित हुआ। वैदिककाल में वेदों का ज्ञान भारतीयों के दैनिक जीवन का एक अभिन्न अंग बन गया था। ये ज्ञान अब भी भारतीयों के जीवन दर्शन में अनेकों रीतियों, प्रथाओं तथा परम्पराओं के रूप में स्थित है। वैदिककाल में यज्ञादि कार्य ऋषियों–मुनियों का एक कार्यानुभव था, जो वैज्ञानिक दृष्टिकोण से बहुत महत्वपूर्ण माना जाता था। वैदिककाल का यज्ञ एक मौखिक आलाप, उच्चारण, अग्नि प्रज्जवलन या केवल आहुति मात्र नहीं था बल्कि एक सुविचारित वैज्ञानिक क्रियाकलाप था, जो वैज्ञानिक परीक्षणों पर आधारित होता था एवं इनका प्रमुख उद्देश्य भौगोलिक परिस्थितियों में परिवर्तन करके उसे अपने अनुरूप बनाना होता था। ऋषि अपने सिद्धो के साथ विभिन्न प्रायोगिक क्रियाकलाप सम्पन्न करते एवं प्रत्यक्ष सहभागिता के द्वारा स्वयं ही शिक्षा प्रक्रिया का संचालन अनौपचारिक रूप से करते थे। वैदिककालीन शिक्षा का केवल एक ही लक्ष्य था छात्रो की शारीरिक, मानसिक एवं अध्यात्मिक शक्तियों का विकास इस प्रकार से करना था, जिससे मोक्ष प्राप्ति के सर्वोच्च लक्ष्य प्राप्त किया जा सके। सादा जीवन उच्च विचारों से निर्देशित होने वाली शिक्षा छात्रों के सर्वागींण विकास पर बल देती थी। वैदिक काल में बालको की आरम्भिक शिक्षा घर पर कुलपुरोहित द्वारा प्रारम्भ की जाती थी। गुरूकुल में उपनयन संस्कार के पश्चात् दी जाने वाली औपचारिक शिक्षा के लिए बालको को नये शिरे से तैयार करना होता था।

IJAMSR

International Journal of Advanced Multidisciplinary Scientific Research (IJAMSR) ISSN:2581-4281

बालको को घर पर ही शब्दों के उच्चारण, शब्दों का ज्ञान, भाषा एवं व्याकरण, गणित से संबंधित प्रारम्भिक बातें सिखलायी जाती थी। अतः बालक का सर्व प्रथम अनौपचारिक शिक्षा संस्थान उसका घर होता था। बालकों को उपनयन संस्कार के पश्चात गुरूकुल में ही रहना, गुरूकुल के नियमों का पालन, अपने गुरू की सेवा करना, उनके कथनानुसार कार्य करना होता था। गुरूकुल में शैक्षिक एवं अध्यात्मिक वातावरण के निर्माण पर बहुत ज्यादा बल दिया जाता था। गुरूकुल का जीवन गुरूओं द्वारा अत्यन्त सरल तथा सहज बनाया जाता। वैदिक काल में काशी, मिथिला, उज्जैन, प्रयाग, कैकय, इत्यादि स्थान शिक्षा के लिए जाने जाते थे। गुरूकुल में प्रवेश की प्रकिया सदाचार एवं योग्यता के आधार पर होती थी और छात्रों को गुरूकुल की परम्पराओं एवं नियमों के अनुकूल आचरण करना होता था। छात्र गुरूकुल में मूलतः 12 वर्ष तक अध्ययन करते थे। किन्तु विस्तृत एवं गहन ज्ञान के लिए अनेंको छात्र 12 वर्ष से अधिक समय तक गुरूकुल में अध्ययन करते थे और गुरूकुल में छात्रों को एक वेद के अध्ययन के लिए 12 वर्ष की अवधि, दो वेदों के अध्ययन के लिए 24 वर्ष, तीन वेदों के अध्ययन के लिए 36 वर्ष एवं जिन्हें चारों वेदों का अध्ययन करना होता था। उन्हें 48 वर्ष तक विद्या ग्रहण करना होता था अर्थात् वह बालक आजीवन ब्रह्मचर्य व्रत का पालन करेगा।

डा0 ए0 एस0 अल्तेकर ने लिखा है – ''ईश्वर भक्ति एवं धार्मिकता की भावना का विकास करना, चरित्र–निर्माण करना, व्यक्तित्व का विकास करना, नागरिक एवं सामाजिक कर्तव्यों का पालन करना, सामाजिक कुशलता की उन्नति एवं राष्ट्रीय संस्कृति का संरक्षण करना प्राचीन शिक्षा प्रणाली के मुख्य उद्देश्य थे।

निष्कर्ष

प्राचीन शिक्षा प्रणाली का मुख्य उद्देश्य व्यक्ति का सम्पूर्ण विकास करना था। इसके लिये व्यक्ति में आत्म सम्मान, आत्मविश्वास, आत्मसंयम, तथा न्याय आदि गुणों का विकास करना है। शिक्षा के उद्देश्यों को निर्धारित करते हुए प्रो0 शिवदत्त ज्ञानी ने लिखा है कि – ''प्राचीन शिक्षा प्रणाली का उद्देश्य मनुष्य को निसर्ग सिद्ध शक्तियों का सम्यक विकास करके उसे सच्चे अर्थ में मनुष्य बनाना था। जिससे वह जीवन की

IJAMSR

International Journal of Advanced Multidisciplinary Scientific Research (IJAMSR) ISSN:2581-4281

पहेलियों को सुलझाने में समर्थ हो सके। प्राचीन साहित्य में शिक्षा का कोई उद्देश्य स्पष्ट नहीं होता है। अनुसांगिक ग्रन्थों की सहायता से उस समय की शिक्षा उद्देश्यों को बतलाया गया है।

संदर्भ सूची

1. अग्रवाल जे0सी0: स्वतंत्र भारत में शिक्षा का विकास अर्थ बुक डिपो, 302 नाई बाल करोल बाग, नई दिल्ली।
2. आचार्य नरेन्द्र देव – बौद्ध धर्म दर्शन।
3. उपाध्याय, गंगा प्रसाद – अद्वैतवाद
4. उपाध्याय, बलदेव – भारतीय दर्शन
5. गुप्ता, लक्ष्मीनारायण – शिक्षा दश्न
6. चौबे, एस0पी0 – भारत और पश्चिम के श्रेष्ठ शिक्षाशास्त्री, तुलनात्मक शिक्षा, विनोद पुस्तक मंदिर आगरा।
7. चौबे हीराला, बेसिक शिक्षा, जन कल्याण प्रकाशन, कल्कत्ता।
8. टैगोर, रवीन्द्रनाथ, शिक्षा।
9. दीवानचन्द्र – पश्चिमी दर्शन
10. दीक्षित, जगदीशचन्द्र – आचार्य नरेन्द्र देव
11. दूबे, रमाकान्त, विश्व के कुछ महान शिक्षाशास्त्री।
12. नागर, डॉ0 पुरूषोत्तम, आधुनिक भारतीय सामाजिक एवं राजनीतिक चिन्तन।
13. पाण्डेय, रामसकल–शिक्षा दर्शन, विश्व के श्रेष्ठ शिक्षाशास्त्री।
14. बाला, बाजपेयी शुक्ला–शिक्षा के दार्शनिक तथा समाजशास्त्रीय आधार
15. गिल आत्मानंद – भारतीय शिक्षा के प्रवर्तक।
16. राधाकृष्णन, भारतीय दर्शन
17. लाल, बसन्त कुमार, समकालीन भारतीय दर्शन, मोतीलाल बनारसी दास, जवाहर नगर, दिल्ली, 1995

IJAMSR

International Journal of Advanced Multidisciplinary Scientific Research (IJAMSR) ISSN:2581-4281

18. वर्मा, रामपाल सिंह, उदीयमान भारतीय समाज में शिक्षा, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा, 2002
19. वर्मा बैजनाथ, प्रसाद, विश्व के महान शिक्षाशास्त्री, बिहार हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, पटना।
20. वीर अर्जुन, स्वतंत्रता दिवस अंक, 1970